DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR

BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
MO- 9415376545

B.A PART-I (846./Gen.)

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No.................. Date. 22/04/20

कर सकता है और क्या नहीं? इस सम्बन्ध में सबसे प्रमुख बात तो यह है कि यदि राजा ~~दुष्ट~~ दुष्ट और निरंकुश है, तो भी यह जान-बुझकर परमात्मा द्वारा भेजा गया है ताकि वह पापियों का दंड दे सके।

(3) राजा ईश्वर के प्रति उत्तरदायी है, जनता के प्रति नहीं — राजा के दैवीय उत्पत्ति के सिद्धान्त की तीसरी मुख्य मान्यता या विशेषता यह है कि राजा ईश्वर के प्रति उत्तरदायी है, जनता के प्रति नहीं, क्योंकि राजा की शक्तियों का स्रोत जनता नहीं है, वह अपनी शक्तियाँ और सत्ता सीधे ईश्वर से प्राप्त करता है इसलिए राजा अपने कार्यों के प्रति सीधे ईश्वर के प्रति उत्तरदायी है।

दैवीय सिद्धांत का महत्त्व

अनेक कमियों और त्रुटियों के कारण राज्य की उत्पत्ति के दैवीय सिद्धान्त की नाव मध्य युग के भँवर जाल में फँसकर प्रखर आलोचना का शिकार होने लगी। उस युग से, जहाँ से आधुनिक युग प्रारंभ होता है, वहाँ तक पहुँचते-पहुँचते तो वह एकदम मरणासन्न हो गई। राज्य की उत्पत्ति का दैवीय सिद्धान्त धीरे-धीरे फीका पड़ गया और धार्मिक उलझनों तक ही सीमित रह गया। विचारक गिलक्राइस्ट का कहना है कि 'इसके तीन प्रमुख कारण थे- पहला सामाजिक ~~सिद्धांत~~ समझौते के सिद्धान्त की बढ़ती हुई लोकप्रियता ने दैवीय सिद्धान्त की रौनक छिनली। दूसरा मध्ययुग में चर्च और राज्य का विवाद चला। पोप और राजा में विवाद चले। अन्ततः विजय तो राजा की हुई पर इससे धार्मिक मान्यताओं की भी बहुत क्षति हुई।

PTO

Scanned with CamScanner

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
MO- 9415376545
B.A PART-I (Sub./Gen.)
LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No.................. Date 22/04/20

तीसरा- नए युग का सवेरा अपने साथ प्रजातंत्र की रश्मियाँ लेकर आया। राजाओं के रूप और उनके रूप को चन्द्रग्रहण लग गया। दैवीय सिद्धान्त निरर्थक और बेमतलब हो गया।

बेशक राज्य की उत्पत्ति का सिद्धान्त अब पुराना पड़ गया है। वह धार्मिक उलझनों में खो गया है। वह अतार्किक है, विवेकशून्य है और आधुनिक परिस्थितियों से मेल नहीं खाता है तो भी शुरू-शुरू में इसने मानव जाति और राजनीति विज्ञान में सर्वप्रमुखता प्राप्त की। ईश्वर के नाम पर ही सही इसने व्यक्तियों को राज्य की आज्ञा का पालन करना सिखाया। मानव इतिहास के उस काल में जब राज्य रूपी संस्था घुटने के बल चल रहा था। दैवीय सिद्धान्त ने वह आधार प्रदान किया जिस पर राज्य रूपी भवन टिक सके। इस संस्था ने अपना औचित्य तब खोया जब राज्य सशक्त और व्यक्ति अधिक विवेकशील हो गया। यद्यपि मध्य युग में यह सिद्धान्त अपने सर्वोच्चता के शिखर पर अपना महत्व बनाया हुआ था।

(समाप्त)

Scanned with CamScanner